कला उत्सव प्रतिवेदन

'कला उत्सव' युवा हो रहे भारत का उत्सव है। उत्सवों के देश भारत वर्ष में युवा हो रहे बच्चों का 'कला उत्सव' 8 से 12 दिसम्बर 2015 तक दिल्ली में मनाया गया। कला उत्सव धर्म, सम्प्रदायों और समुदायों से परे भारत की सांस्कृतिक विविधता की समग्र छवी को एक मंच पर प्रस्तुत करने वाला पर्व है। वैसे तो यह उत्सव 7 दिसम्बर को ही शुरू हो गया था जब निर्णायक मंडल के सभी सदस्यों ने राज्यों द्वारा भेजे गए ऑन – लाईन प्रोजेक्ट को देखा और उसका आकलन किया। ऑन-लाईन प्रोजेक्ट के तहत बच्चे अपने क्षेत्र के कलारूपों का चयन कर उसके विशेषज्ञों से मिले, उस कला रूप को प्रस्तुत करने वाले समुदाय के साथ संपर्क स्थापित किया और उनसे कलारूप के गूढ़ को सीखा – समझा। ऑन – लाईन प्रोजेक्ट के माध्यम से बच्चों में अनुसंधान की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला जिसके माध्यम से वे कला को शिक्षा से जोड़ने में समर्थ हुए। उदाहरण के लिए असम के नाटक एवं नृत्य, गोवा के नाटक, केरल के नाटक, हरियाणा की दृश्य कला आदि के ऑन-लाईन प्रोजेक्ट को देखा जा सकता है जिसने न सिर्फ बच्चों में अपनी पारंपरिक कलाओं के प्रति जिज्ञासा को बढ़ाया बल्कि उनका सम्मान करना, समुदाय से जोड़ने और स्त्री – पुरूष के भेद को कम करने का प्रयास किया। उदाहरणार्थ सांझी जैसी पारंपरिक दृश्य कलाओं को प्राय: महिलाएँ ही करती रही हैं। ऑन-लाईन प्रोजेक्ट में स्पष्ट देखा जा सकता है कि कैसे उस दृश्य कला को लड़के करते हुए आनंद का अनुभव कर रहे थे।

उद्घाटन समारोह के पूर्व माननीय मंत्री महोदया का स्वागत करते हुए असम की बच्चियाँ।

जिस तरफ भी दृष्टि जाती, पारंपरिक वेश भूषा में अपने पारंपरिक गीतों, नृत्यों का अभ्यास करते बच्चों के मनोरम दृश्य दिखाई देते थे। अगर आप पंजाबी नृत्य को देख रहे हैं, तो पीछे से मणिपुरी संगीत की ध्वनि आपके कानों को दस्तक दे रही होती थी। मणिपुरी संगीत का आनंद लेने आप पलटते, तो केरल की दृश्य कलाएँ आपको मूक आमंत्रण दे रही होतीं। कश्मीर से कन्याकुमारी, उत्तर पूर्व भारत से लेकर पश्चिम भारत तक ऐसे – ऐसे कलारूप देखने को मिल रहे थे जो लुप्त प्राय थे। यह सुभग दृश्य कला उत्सव के प्रथम दिन उद्घाटन के पूर्व दिनांक 8 दिसंबर 2015 का था।

मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार, सम्माननीय स्मृति ईरानी जी का पदार्पण होने पर उनके स्वागत में अपनी पारंपरिक वेशभूषा में बच्चे आगे बढ़कर आये, उनका तिलक किया और उन्हें खुले रंगमंच तक अगुवानी कर ले आये। खोल और झाँझ बजाते हुए असम के बच्चों ने पूरे वातावरण को स्वर और ताल से पुलकित कर दिया।

राष्ट्रीय बाल भवन में कला उत्सव का उद्घाटन माननीय मंत्री महोदया द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। माननीय मंत्री महोदया ने अपने उद्घाटन उद्बोधन में राष्ट्र भर से एकत्र हुए कक्षा 9वीं से 12वीं तक के बच्चों को भाईचारे एवं समन्वय का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हम सब यहाँ प्रतियोगिता की भावना से एकत्र हुए हैं लेकिन जिस समय हम वापस जाएँ, हमारे हृदय में एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना लेकर जाएं। उद्घाटन समारोह में श्री एस. सी. खुंटिया (सचिव, विद्यालय शिक्षा एवं साक्षरता), रीना रे (अतिरिक्त सचिव, विद्यालय शिक्षा एवं साक्षरता), मनीष गर्ग (संयुक्त सचिव, विद्यालय शिक्षा), प्रो० हृषिकेश सेनापति (निदेशक, रा०शै०अनु०प्र०प०), प्रो० बी. के. त्रिपाठी (संयुक्त निदेशक, रा०शै०अनु०प्र०प०), सुदेशना सेन (सचिव रा०शै०अनु०प्र०प०), डॉ. ऊषा कुमारी (निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन) इस कार्यक्रम की सयोजक, प्रो० पवन सुधीर (विभागाध्यक्ष डी.ई.ए.ए.), एवं रा. शै. अनु. प्र. प. के सभी विभाग के विभागाध्यक्ष एवं अन्य संकाय सदस्य उपस्थित थे।

संगीत प्रितयोगिता में विशेष आवश्यकता समूह के बच्चों की प्रस्तुति।

कला उत्सव में एक सेल्फी कॉर्नर की भी व्यवस्था थी जहाँ उन्मुक्त भाव से बच्चों ने मंत्री महोदया के साथ - साथ अपनी रूचि के अनुसार निर्णायक मंडल, अन्य साथियों के साथ सेल्फी का आनंद लिया, साथ ही उसे सोशल नेटवर्क (फेसबुक, व्हाट्सअप आदि) पर भी डाल कर उत्सव को विस्तार प्रदान किया।

उद्घाटन समारोह के उपरांत कला के सभी रूपों (नृत्य, संगीत, नाटक और दृश्य कलाओं) की प्रतियोगिता आरंभ हुई। देश भर के प्रतिष्ठित पद्मभूषण, पद्मश्री, संगीत नाटक अकादमी सम्मान से सम्मानित कलाकारों के निर्णायक मंडल भी इन बच्चों की प्रस्तुतियों को देख कर आश्चर्य चकित थे। इन प्रस्तुतियों और बच्चों की प्रतिभा को देखकर लगता था कि जैसे चुन – चुन कर बच्चों रूपी प्रतिभा फूल को एक धागे में पिरोकर माला बना दी गई हो। तीन दिनों तक चलने वाली यह प्रतियोगिता रोमांचक अनुभव दे गई। विशेष आवश्यकता समूह के बच्चों द्वारा किया गया प्रदर्शन अदभुत था। दिल्ली से संगीत प्रतियोगिता में भागीदारी करने वाली पूरी टीम ही विशेष आवश्यकता समूह के बच्चों की थी, जिन्होंने अविस्मरणीय प्रस्तुति की। सिर्फ संगीत ही नहीं नृत्य, नाटक और दृश्य कलाओं में भी विशेष आवश्यकता समूह के बच्चों की भागीदारी अग्रणी रही। कला उत्सव सिर्फ सांस्कृतिक रूप से अनेकता में एकता का उत्सव नहीं था, बल्कि यहाँ सामाजिक रूप से भी अनेकता में एकता का महत्व था। तभी तो प्रतियोगिता में लड़के, लड़कियाँ और विशेष आवश्यकता समूह के बच्चों की समान भागीदारी थी। कई ऐसे कलारूप जिन्हें परंपरागत रूप से पुरूषवर्ग द्वारा किया जाता रहा है, उन्हें लड़कियों ने यहाँ प्रस्तुत किया, उदाहरणार्थ पश्चिम बंगाल के छऊ और दिल्ली की रामलीला की प्रस्तुतियों को देखा गया था। दृश्य कलाओं के लिए अलग से प्रदर्शनी की व्यवस्था थी जहाँ सभी 36 राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों के बच्चों ने अपनी – अपनी कलाओं का खुल कर प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता में प्रदर्शन का स्तर इतना उच्च था कि निर्णायक मंडल के लिए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान का निर्णय करना कठिन कार्य हो गया। अंतत: उन्होंने संगीत और दृश्य कलाओं में कुछ पुरस्कार दो – दो दलों को प्रदान करने का निर्णय लिया।

नृत्य प्रतियोगिता का एक दृश्य

संगीत प्रतियोगिता का एक दृश्य

समाज के संतुलित विकास में स्त्री की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी पुरूष की। भारतीय संविधान में स्पष्ट रूप से स्त्री और पुरूष को समानता का अधिकार दिया गया है। बावजूद इसके कई सामाजिक कुरीतियों और भ्रांतियों के कारण हमारे समाज में बेटियों की संख्या का अनुपात बेटों की अपेक्षा कम है। उदाहरण स्वरूप- दमन एवं दिऊ, दिल्ली, हरियाणा आदि को देखा जा सकता है जहाँ 1000 पुरूष पर 775 से लेकर 879 तक महिलाओं की संख्या है, जो हमारे समाज के विकास के लिए एक गम्भीर रूकावट बनता दिखाई दे रहा है। बेटियों को संवैधानिक अधिकार प्राप्त होने पर भी समाज में वह महत्व नहीं मिल पा रहा है जिसकी वह हकदार हैं। इसके लिए इस विषय पर सामाजिक स्तर पर संवेदनशीलता की आवश्यकता है। समाज से इस मुद्दे पर संवाद स्थापित करने के लिए कला से बेहतर और क्या माध्यम हो सकता है? समाज में बेटी की सशक्त भूमिका की अनिवार्यता को महसूस करते हुए माननीय प्रधानमंत्री जी ने कला उत्सव का वेबसाईट उद्घाटन करते हुए 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' को विषय वस्तु बनाने की सलाह दी थी। इस सुझाव से विभिन्न जीवंत पारंपरिक कलारूपों में आज की सामाजिक आवश्यकतानुरूप विषयवस्तु 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' को प्रस्तुत करना एक चुनौती भरा कार्य तो था, परन्तु साथ ही प्रयोगशीलता के फलस्वरूप एक कदम आगे बढ़ाने का ज़रिया भी।

इस उत्सव में बिना किसी लिंग भेदभाव के लड़कियों की भागीदारी लड़कों से लगभग दो गुणी संख्या में थी, जो एक स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज की प्रतिछवि प्रस्तुत करती है। साथ ही प्रधानमंत्री जी के संदेश को आत्मसात कर न सिर्फ कला में बल्कि बच्चों के जीवन में भी उसे उतारने का बेहतर उदाहरण भी प्रस्तुत करती है।

बच्चों द्वारा संगीत, नृत्य, नाटक और दृश्य कलाओं द्वारा एक ही विषय के विभिन्न पहलुओं को ये अपनी – अपनी प्रस्तुति में उभार कर सामने लाना एक बेजोड़ अनुभव था। एक ही विषय पर 36 राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों की प्रस्तुतियों को देखकर एकरसता (monotony) के स्थान पर समरूपता (harmony) का एहसास होता था। इसके पीछे कारण था उन

केंप फायर का एक दृश्य

माननीय मंत्री महोदया बच्चों के साथ सेल्फी लेते हुए।

बच्चों द्वारा अपने प्रदेशों के कलारूपों पर किया गया शोध कार्य।

भला परंपरागत शिक्षा प्रणाली या कक्षाई व्यवस्था में कहाँ बच्चों को इस तरह सीखने का आनंद प्राप्त होता है? कला उत्सव में भागीदारी कर रहे बच्चे भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को जाने – अनजाने संरक्षित कर उसके संवाहक बन रहे थे।

माननीय मंत्री महोदया स्मृति ईरानी जी की सलाह पर एक संध्या कैंप फायर का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य ही था बच्चों में भाईचारे और समन्वय की भावना को बढ़ावा देना साथ ही एक दूसरे से सीखने का विशेष मौका देना और विभिन्न कलारूपों के निर्णायक मंडल, राज्यों से आये पदाधिकारीयों एवं शिक्षकों के साथ विचारों को साझा करना। सांस्कृतिक आदान – प्रदान और विभिन्न समुदायों की संस्कृति का सम्मान संध्या में कैंप फायर के दौरान अपनी चरम अवस्था में था। उत्साहित बच्चों का ये दल जाने एक दूसरे से कितना कुछ सीख लेने के लिए प्रयासरत था।

स्मरण हो कि पहले दिन सभी बच्चे अपने – अपने दलों में ही अपनी – अपनी कलाओं का अभ्यास करते देखे गये थे। किन्तु दूसरे दिन से ही यह दूरियाँ कम होती चली गई और अद्भुत दृश्य यह था कि झारखंड के बच्चे संथाली नृत्य सीख रहे थे, बंगाल के बच्चे गुजराती बच्चों से गरबा नृत्य सीखते – सीखते, गरबा और छऊ को मिलाकर नृत्य करते दिखाई दिए।

ठंढ के मौसम में आग के चारों ओर नाचते–गाते, जलेबियों का आनंद उठाते बच्चे, विशिष्ट अतिथि, प्रो० रामशंकर कटारिया (राज्य शिक्षा मंत्री, भारत सरकार), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, रा० शै० अनु० प्र० प० एवं और बाल भवन के उच्चाधिकारीगण। सोशल नेटवर्क एवं मीडिया संबंधी अन्य गतिविधियों के लिए गठित मीडिया टीम का योगदान कला उत्सव को विस्तार प्रदान करने में प्रशंसनीय था। मीडिया टीम में एन.सी.ई.आर.टी. के टीम के अतिरिक्त अमेटी विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के छात्रों की भी भूमिका सराहनीय रही। पत्रकारिता विभाग के छात्रों ने एन.सी.ई.आर.टी. की टीम की

देख – रेख में पूरे कला उत्सव को एक अनुसंधान कार्य के रूप में देखा और उसे अपनी परियोजना के रूप में संपन्न किया। कई लघु फिल्में बनाई गई जिसका प्रदर्शन समापन समारोह के दौरान किया गया। इस प्रयास के कारण हजारों व्यक्ति फेसबुक, ट्विटर और अन्य पूर्व के विज्ञापन, अखबारों, एफ.एम., सोशल नेटवर्क पर कला उत्सव से जुड़े रहे।

दिसम्बर 8 – 10, कला उत्सव की प्रतियोगिताएँ चलीं एवं सभी समारोह के आनन्द प्रवाह में मशगूल हो गए। कला उत्सव का पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 11-12-2015 को सिरी फोर्ट प्रेक्षागृह में संपन्न हुआ। सिरी फोर्ट प्रेक्षागृह का प्रांगण माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी जी के पदार्पण के साथ रोमांचित हो उठा।

विभिन्न प्रदेशों के पारंपरिक वाद्य यंत्रों के स्वागत गान से जिसे कला उत्सव में प्रतिभागिता कर रहे बच्चे बजा रहे थे, माहौल और भी पुलकित हो उठा। लगभग 70 से ऊपर देशज वाद्य यंत्रों का ऑर्केस्ट्रा शायद ही किसी पूर्व के आयोजन में देखा गया हो। मंत्री महोदया के अतिरिक्त इस उत्सव के विशिष्ट अतिथि रूप में नोबेल पुरस्कार विजेता, माननीय कैलाश सत्यार्थी, प्रसिद्ध नृत्यांगना, माननीय सोनल मानसिंह एवं देश के प्रसिद्ध बाल साहित्यकार रस्किन बॉंड थे।

पुरस्कार वितरण समारोह में पूरा प्रेक्षागृह उत्साह से भरा था। प्रदेशों से आए सभी अध्यापक और बच्चे, माननीय अतिथिगण एवं माननीय निर्णायक मंडल, सभी ने चयनित कार्यक्रमों का आनंद उठाया। दिल्ली प्रदेश के विशेष आवश्यकता समूह वाले बच्चों का गायन, असम का बीहू एवं दादरा नगर हवेली के टरपा नृत्य ने सबका मन मोह लिया। छत्तीसगढ़ की टीम द्वारा लोक संगीत की प्रस्तुति भी प्रभावकारी थी।

कार्यक्रम के उपरांत निर्णायक मंडल के सदस्यों को माननीय मंत्री महोदया ने सम्मानित किया। कला उत्सव के पहचान चिह्न (logo) को अभिकल्पित करने के लिए जबलपुर, मध्यप्रदेश की 12वीं कक्षा की छात्रा स्तुति सिंह परिहार को भी सम्मानित किया गया। प्रथम बार रंगों से खेलते हुए, इस बच्ची ने कहाँ सोचा होगा कि कला के

दृश्य कला प्रतियोगिता का एक दृश्य

कारण उसे इतना सम्मान प्राप्त होगा।

अब बारी थी पुरस्कार घोषणा की। प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत राज्यों की टीमों की खुशी का मानो कोई ठिकाना ही नहीं। नाचते – गाते बच्चे, मंत्री महोदया जी के साथ सहजता पूर्वक तस्वीरें ले रहे थे। मंत्री महोदया का बच्चों के साथ घुलमिल जाना, पूरे वातावरण को एक अलग रूप प्रदान कर रहा था। ऐसे हो भी क्यों नहीं, मंत्री महोदया ने तो प्रथम दिन ही बच्चों के साथ सेल्फी खिंचा कर एक आत्मीय संबंध स्थापित कर लिया था।

विशिष्ट अतिथि कैलाश सत्यार्थी एवं सोनल मानसिंह ने अपने – अपने अनुभव बच्चों के साथ साझा किए।

रेडियो, बैनर आदि के माध्यम से किए गए प्रचार-प्रसार ने दिल्ली प्रदेश के लोगों में कला उत्सव को लेकर एक विशेष उत्सुकता बनाई रखी। एन.सी.ई.आर.टी. के सी.आई.ई.टी. विभाग द्वारा सभी कार्यक्रमों एवं कलारूपों की प्रतियोगिता का वीडियो डाक्यूमेंटेशन करना एक विशेष उपलब्धी रही, जिसका उपयोग भविष्य में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण होगा। समापन समारोह का दूरदर्शन द्वारा सीधे प्रसारण ने कला उत्सव को लाखों लोगों तक पहुँचाया जिससे सुदूर गाँव में बैठे अभिभावक गण कला उत्साव में प्रदर्शन करते अपने बच्चों को देख आनंद ले पाए।

मंत्री महोदया ने अपने संबोधन में बच्चों को राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर का सिपाही बताया एवं बच्चों के उत्साह को देखते हुए कहा कि 'भारत की आने वाली पीढ़ी प्रगति के पथ पर टेक्नोलॉजी के साथ-साथ अपने मन में कला एवं संस्कृति के भाव को भी ले चल रही है।'

कला उत्सव में प्रतियोगिताओं का आयोजन नेशनल बाल भवन में किया गया जो अपने आप में बच्चों के लिए दर्शनीय स्थल है। 2000 से ऊपर व्यक्तियों की भागीदारी के बावजूद भी इस उत्सव में साफ – सफाई का विशेष ही महत्व था। पूरे परिसर को देख कर लगता था कि जैसे यह एक छोटा भारत हो और जिसने प्रधानमंत्री जी के चलाये 'स्वच्छ भारत

अभियान' को आत्मसात कर लिया हो। कला उत्सव मानव संसाधन विकास मंत्रालय की पहल थी और उसे सफल बनाने में रा०शै०अनु०प्र०प० का अथक परिश्रम और नेशनल बाल भवन का पूर्ण सहयोग शामिल था।

कला उत्सव अपने आप में बहुस्तरीय कार्यक्रम है। विद्यालय स्तर से आरंभ होकर जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होते – होते यह कार्यक्रम लगभग एक लाख व्यक्तियों को अपने साथ जोड़ पाया। इसमें राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों की भी महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक भूमिका रही।

छोटे से गाँव के बच्चे, बच्चीयाँ जिन्होने कभी शहर नहीं देखा तथा रेल में नहीं बैठे, कला उत्सव उनके जीवन भर स्मरण का कार्यक्रम बन गया। सुदूर गाँव से देश की राजधानी की रोमांचकारी यात्रा, रेल और हवाई जहाज तक से की। उत्तर पूर्व के राज्यों एवं कुछ द्वीप समूह की यातायात असुविधा को देखते हुए, यह सेवा उन्हें विशेष रूप से प्रदान की गई थी। वे दिल्ली आकर उपराष्ट्रपति जी से मिले और संसद भवन गये। दिनांक 12 दिसम्बर, 2015 को उन्हें विशेष रूप से दिल्ली भ्रमण कराया गया। ये सारी विशेष स्मृति कहीं न कहीं उनके जीवन भर के स्मरण में अंकित होकर उन्हें आगे बढ़ाने में तो सहायता करेंगी, साथ ही राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

कला उत्सव निश्चित रूप से बच्चों में अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना जागृत कर, सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाकर, नैतिक दिशा प्रदान करते हुए, शिक्षा के लिए एक नये रास्ते का अनुसंधान करता उत्सव है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगा।